- संवाद-लेखन -

संवाद - 'वाद' मूल शब्द में 'सम' उपसर्ग लगाने से संवाद बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'बातचीत' है। इसे वार्तालाप भी कहा जाता है। सामान्य रूप से दो लोगों के बीच होने वाली बातचीत को संवाद कहा जाता है।

दो लोगों में हुई बातचीत को लिखना संवाद लेखन कहलाता है।

संवाद की विशेषताएं —

① स्वाभाविकता — संवाद में स्वाभाविकता होनी चाहिए। पात्रों को अपनी स्थिति संस्कार आदि को ध्यान में रखकर बोलना चाहिए।

② पात्रानुकूल भाषा :- संवाद में भाग ले रहे व्यक्तियों की भाषा उनकी आयु, शिक्षा आदि के अनुरूप होनी चाहिए

③ प्रभाव शैली — संवाद को बोलने की शैली प्रभावी होनी चाहिए। सुनने वाले पर संवाद का असर होना चाहिए।

④ जटिलता से दूर :- संवाद की भाषा में जटिलता नहीं होनी चाहिए। इससे सुनने वाला बात को आसानी से समझ सके और उसका यथोचित जवाब भी दे सके।

P.T.O.

शालीनता :- संवाद की भाषा में शालीनता अवश्य होनी चाहिए। इसमें आक्षिप्त अर्थात अपशब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

-विषय- गाँव से कुछ दूरी पर रेलगाड़ी दुर्घटना ग्रस्त हो गई है, दो मित्र वहाँ पीड़ितों की सहायता के लिए जाना चाहते हैं। इनके मध्य हुए संवाद का लेखन कीजिए।

अक्षय - नमस्ते संजीव! घबराए हुए कहाँ से भागे आ रहे हो

संजीव- नमस्ते अक्षय! तुमने सुना नहीं शायद रेलगाड़ी के डिब्बे पटरी से उतर गए हैं

अक्षय :- क्या जान-माल की ज्यादा क्षति (नुकसान) हुई है?

संजीव :- हाँ दो डिब्बे पटरी से उतरकर आपस में टकरा गए हैं।

अक्षय :- पर, अब तुम कहाँ जा रहे हो?

संजीव :- मैं घायलों को रक्तदान करने जा रहा हूँ।

अक्षय :- मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ। मैं लोगों से कहूँगा कि यात्रियों के लिए कुछ आवश्यक सामान भी ले चलें।

संजीव : यह ठीक रहेगा।

अक्षय :- मैं गोपी चाचा से कहता हूँ कि वे अपनी जीप से सबको ले चलें। उनकी जीप से घायलों को अस्पताल तक जल्दी पहुँचाया जा सकता है।

संजीव :- डॉ० रमेश अंकल को भी साथ ले चलना। वे घायलों की प्राथमिक चिकित्सा कर सकेंगे।

अक्षय :- तुम्हारा यह सुझाव बहुत अच्छा है।

संजीव :- चलो सबको लेकर वहाँ जल्दी से पहुँचते हैं।

(पत्र लेखन)

पत्र दो प्रकार के होते हैं—
1. औपचारिक पत्र
2. अनौपचारिक पत्र

(1) औपचारिक पत्रों को कई वर्गों में बाँटा जा सकता है, जैसे-

1. प्रधानाचार्य या प्रधानाचार्या को लिखा जाने वाला प्रार्थना पत्र
2. कार्यालयों को लिखा जाने वाला प्रार्थना पत्र
3. शिकायत सुझाव संबंधी पत्र
4. संपादकीय पत्र
5. आवेदन पत्र
6. अन्य पत्र

इन पत्रों को लिखने का ढंग तथा इनकी भाषाशैली में अंतर होता है। इन पत्रों का प्रारूप समझ लेने से पत्र लिखने में सुविधा होती है।

प्रधानाचार्य को लिखे जाने वाले पत्र का प्रारूप

सेवा में
प्रधानाचार्य / प्रधानाचार्या जी
क, ख, ग ....
....
गोरखनाथ, गोरखपुर ← विद्यालय का नाम एवं पता

विषय :- दो दिन का अवकाश (बीमारी) ← विषय का उल्लेख
महोदय / महोदया ← संबोधन

....
.... ← पत्र का विस्तार या मुख्य
....

विषय वस्तु

धन्यवाद
आपकी आज्ञाकारी शिष्या या अज्ञाकारिणी शिष्या
— मौनिका — नाम
नवीं (अ) 10 कक्षा वर्ग एवं अनुक्रमांक - R.No.
7-10-2020 दिनांक

प्रधानाचार्या को पत्र लिखकर स्वास्थ्य-लाभ हेतु दो दिन का अवकाश प्राप्त कीजिए —

सेवा में
प्रधानाचार्या महोदया
जी० एन० नेशनल पब्लिक स्कूल
गोरखनाथ, गोरखपुर
विषय - अवकाश-प्राप्ति (बीमारी हेतु)
महोदया,
निवेदन है कि कल शाम के बाद से मैं ज्वर (बुखार) से पीड़ित हो गयी हूँ। डॉक्टर ने मुझे दो दिन के लिए विश्राम करने की सलाह दी है। अतः कृपया मुझे 7-8 अक्टूबर, 2020 का अवकाश प्रदान करें।
सधन्यवाद
आपकी आज्ञाकारिणी
मौनिका जैन
नवीं 'अ'
अनु० 10
दिनांक - 7.10.2020

विशेष टिप्पणी - ① परीक्षा में पत्र लिखते समय अपने विद्यालय का नाम नहीं लिखेंगे।

P.T.O.

(3) अपने नाम के स्थान पर कोई अन्य नाम लिखेंगे।
(4) मार्जिन लाइन के तुरन्त बाद से लिखना शुरू करेंगे जगह खाली नहीं छोड़ेंगे।
(5) भाषा सरल, सहज एवं स्पष्ट होनी चाहिए।

(2)

आपके विद्यालय में खेल सुविधाएँ बहुत कम हैं आपने विद्यालय के प्रधानाचार्या को पत्र लिखिए जिसमें खेल संबंधी सुविधाएं उपलब्ध कराने की प्रार्थना की गयी हो।

सेवा में
प्रधानाचार्या महोदया
जी.एन. नेशनल पब्लिक स्कूल
गोरखनाथ गोरखपुर
विषय — खेल संबंधी सुविधाओं के संबंध में।
महोदया
मैं आपके विद्यालय की चौथी कक्षा का छात्र हूँ। मैं आपका ध्यान इस विद्यालय में खेल संबंधी कमियों की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। महोदया बरसात के बाद हमारे विद्यालय के खेल के मैदान में जगह जगह गड्ढे एवं अन्य कीट पतंगों की भरमार हो गयी है जिससे वहाँ खेला नहीं जा सकता है। इसके अलावा खेल सामानों की घोर कमी है। इससे खेल के पीरियड में हमें माँगने पर सामान नहीं मिल पाता है। जो सामान मिलते हैं वे दयनीय स्थिति में होते हैं इससे हम ढंग से खेलने से वंचित रह जाते हैं और हम चाह कर भी खेल प्रतियोगिताओं में कोई पदक नहीं ला पाते हैं।
अतः आपसे प्रार्थना है कि खेलों का नया सामान मंगवाने एवं खेल के मैदान की दशा सुधारने के लिए आवश्यक कदम उठाने की

07

कृपा करें
धन्यवाद
पापी / भवदीय
व्योम श्रीवास्तव
नौवीं (ब) अनु॰ -25
7॰ 10-2020